दैनिक नगर संवाद
हम बनेंगे, आपकी आवाज़
R.N.I : UPHIN/2017/740
लखनऊ, उन्नाव, फतेहपुर, उरई, झांसी, इटावा, कुशीनगर, हाथरस, एटा, कन्नौज, बाराबंकी, आगरा में प्रसारित व कानपुर से प्रकाशित ...
वर्ष : 10 अंक : 264 कानपुर , 29 सितम्बर, मंगलवार 2026 पृष्ठ : 8 मूल्य : 2.00 रुपए

फसल अवशेष प्रबंधन प्रशिक्षणः पराली से समाधान और खेत से समृद्धि की ओर

हरि ओम गुप्ता

कानपुर (नगर संवाद) । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा 28 सितंबर से 02 अक्टूबर 2026 तक पांच दिवसीय फसल अवशेष प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों को पराली जलाने के विकल्प, आधुनिक कृषि मशीनरी तथा फसल अवशेषों के वैज्ञानिक एवं लाभकारी उपयोग के प्रति जागरूक करना है। इन-सिटू एवं एक्स-सिटू फसल अवशेष प्रबंधन की वैज्ञानिक तकनीकों की जानकार दी गई। सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर, हैप्पी सीडर, मल्चर एवं अन्य आधुनिक कृषि यंत्रों की किसानों को जानकारी दी गई।किसानों को कृषि मशीनरी का व्यावहारिक एवं हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण प्रदान किया गया, ताकि वे मशीनों की कार्यप्रणाली एवं उपयोग को खेत स्तर पर बेहतर ढंग से समझ सकें।एकीकृत कीट प्रबंधन, कीट पहचान, निगरानी एवं फसल सुरक्षा के वैज्ञानिक उपायों पर जानकारी दी गई। डॉक्टर दीपक मिश्रा, डॉ अरुण कुमार सिंह, डॉक्टर शशिकांत,डॉक्टर राजेश राय एवं डॉक्टर निमिषा स्वास्थ्य सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

लोक जनसंदेश

वर्षः 12 अंकः 119 पृष्ठः 08 कानपुर महानगर, मंगलवार, 29 सितम्बर 2026 मूल्य : रु 2.00

फसल अवशेष प्रबंधन प्रशिक्षणः पराली से समाधान और खेत से समृद्धि की ओर

संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा 28 सितंबर से 02 अक्टूबर 2026 तक पांच दिवसीय फसल अवशेष प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों को पराली जलाने के विकल्प, आधुनिक कृषि मशीनरी तथा फसल अवशेषों के वैज्ञानिक एवं लाभकारी उपयोग के प्रति जागरूक करना है। इन-सिटू एवं एक्स-सिटू फसल अवशेष प्रबंधन की वैज्ञानिक तकनीकों की जानकार दी गई। सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर, हैप्पी सीडर, मल्चर एवं अन्य आधुनिक कृषि यंत्रों की किसानों को जानकारी दी गई। किसानों को कृषि मशीनरी का व्यावहारिक एवं हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण प्रदान किया गया, ताकि वे मशीनों की कार्यप्रणाली एवं उपयोग को खेत स्तर पर बेहतर ढंग से समझ सकें। एकीकृत कीट प्रबंधन, कीट पहचान, निगरानी एवं फसल सुरक्षा के वैज्ञानिक उपायों पर जानकारी दी गई। डॉक्टर दीपक मिश्रा, डॉ अरुण कुमार सिंह, डॉक्टर शशिकांत,डॉक्टर राजेश राय एवं डॉक्टर निमिषा स्वास्थ्य सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

पराली नहीं, संसाधन है : किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन की आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण

दि ग्राम टुडे,
कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, दिलीप नगर द्वारा सोमवार से पांच दिवसीय फसल अवशेष प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 28 सितंबर से 2 अक्टूबर 2026 तक आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को पराली जलाने से होने वाले नुकसान के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ फसल अवशेषों के वैज्ञानिक एवं लाभकारी उपयोग की आधुनिक तकनीकों से परिचित कराना है।

प्रशिक्षण के दौरान किसानों को इन-सिटू एवं एक्स-सिटू फसल अवशेष प्रबंधन की वैज्ञानिक तकनीकों की विस्तार से जानकारी दी गई। विशेषज्ञों ने बताया कि फसल अवशेषों को खेत में जलाने के बजाय उनका उचित प्रबंधन कर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के साथ पर्यावरण संरक्षण और कृषि लागत में कमी की दिशा मे प्रभावी कदम उठाया जा सकता है।

आधुनिक कृषि यंत्रों का दिया गया प्रशिक्षण

प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों को सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर, हैप्पी सीडर, मल्चर सहित विभिन्न आधुनिक कृषि यंत्रों की कार्यप्रणाली और उपयोगिता के बारे में जानकारी दी गई। किसानों को केवल सैद्धांतिक जानकारी ही नहीं दी गई, बल्कि कृषि मशीनरी का व्यावहारिक एवं हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया, ताकि वे खेत स्तर पर इन मशीनों का प्रभावी ढंग से संचालन और उपयोग कर सकें।

विशेषज्ञों ने बताया कि आधुनिक कृषि यंत्रों की मदद से फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन किया जा सकता है और पराली जलाने की आवश्यकता को काफी हद तक समाप्त किया जा सकता है।

कीट प्रबंधन और फसल सुरक्षा पर भी जानकारी

प्रशिक्षण के दौरान किसानों को एकीकृत कीट प्रबंधन के बारे में भी विस्तार से बताया गया। इसमें फसलों में लगने वाले विभिन्न कीटों की पहचान, उनकी निगरानी तथा फसल सुरक्षा के वैज्ञानिक उपायों की जानकारी दी गई। वैज्ञानिकों ने किसानों से फसल में अनावश्यक रासायनिक दवाओं के प्रयोग से बचते हुए वैज्ञानिक एवं समन्वित फसल सुरक्षा उपाय अपनाने का आह्वान किया।

पराली जलाने से मिट्टी और पर्यावरण को नुकसान

वैज्ञानिकों ने कहा कि पराली जलाने से जहां वायु प्रदूषण बढ़ता है, वहीं मिट्टी के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। फसल अवशेष जलाने से मिट्टी में मौजूद कई उपयोगी पोषक तत्व नष्ट होते हैं और जैविक पदार्थ की मात्रा प्रभावित होती है। ऐसे में फसल अवशेषों को जलाने के बजाय उनका पुनर्चक्रण एवं वैज्ञानिक प्रबं[illegible] किसानों और पर्यावरण दोनों के [illegible] लाभकारी है। उन्होंने किसानो[illegible] आह्वान किया कि पराली को अपशिष्ट न समझकर कृषि संसाधन के रूप में इस्तेमाल करें। फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन से मिट्टी की सेहत सुधारने, पर्यावरण संरक्षण तथा खेती की लागत कम करने के साथ किसान की आय बढ़ाने की दिशा में भी मदद मिल सकती है।

कार्यक्रम के दौरान किसानों को संदेश दिया गया "पराली बचाएं, अवशेषों का पुनर्चक्रण अपनाएं, आधुनिक कृषि मशीनरी अपनाएं, पर्यावरण बचाएं, [illegible] और किसा[illegible] डॉ [illegible] ड[illegible] त, डॉ. राय एवं डॉ. निमिषा स्वास्थ्य [illegible] कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक, विशे[illegible] एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

सप
स

दैनिक,
अयोध्या
जयसिं
महासचि
शिष्टाच
अखेश
रहे।

| में बढ़े
ी
02
विश्ववार्ता
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
विश्ववार्ता
उत्तरप्रदेश, दिल्ली और उत्तराखंड से एक साथ प्रकाशित
सच्ची ख़बर, पैनी नज़र
248 लखनऊ, मंगलवार, 29 सितंबर 2026 | पृष्ठ : 16, मूल्य: ₹4/- | www.vishwavarta.com
ईशा सिंह ने एशियन गेम्स में बढ़ा

कृषि विश्वविद्यालय में फसल अवशेष प्रबंधन पर प्रशिक्षण शुरू

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में रविवार से फसल अवशेष प्रबंधन पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ। यह प्रशिक्षण 2 अक्टूबर तक चलेगा। इसका उद्देश्य किसानों को पराली जलाने के विकल्प और आधुनिक मशीनों के उपयोग के प्रति जागरूक करना है। किसानों को इन–सिटू और एक्स–सिटू प्रबंधन तकनीकों, सुपर सीडर, हैप्पी सीडर, मल्चर समेत अन्य यंत्रों की जानकारी दी गई। वैज्ञानिकों ने हैंड्स–ऑन प्रशिक्षण देकर मशीनों की कार्यप्रणाली समझाई और बताया कि पराली जलाने से वायु प्रदूषण, मिट्टी की सेहत खराब होती है और पोषक तत्व नष्ट होते हैं। पराली अपशिष्ट नहीं बल्कि संसाधन है, जिसके पुनर्चक्रण से आय भी बढ़ेगी। इस मौके पर डॉ. खलील खान, डॉ. दीपक मिश्रा, डॉ. अरुण कुमार सिंह सहित अन्य वैज्ञानिक मौजूद रहे।